

संपादकीय रेखा गुप्ता दिल्ली की मुख्यमंत्री

रेखा गुप्ता को दिल्ली की मुख्यमंत्री बना कर भाजपा ने ऐतिहासिक कदम उठाया है जबकि वे वर्तमान समय में किसी भाजपा शासित राज्य में पहली महिला मुख्यमंत्री होंगी। रेखा गुप्ता को दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई गई। यह एक महत्वपूर्ण कदम है जबकि वे राष्ट्रीय राजधानी में इस उच्च पद पर पहुँचने वाली पार्टी-भाजपा के लिए महत्वपूर्ण है। उनका पद पर आसीन होना न केवल भारतीय जनता पार्टी-भाजपा के लिए महत्वपूर्ण है जो दिल्ली में 27 साल बाद सत्र में आई है, बल्कि यह शहर के राजनीतिक परिदृश्य में भी परिवर्तनकारी बदलाव है। उनका पद पर आसीन होना न केवल भारतीय जनता पार्टी-भाजपा के लिए महत्वपूर्ण है जो हालांकि इसलिए भी ऐतिहासिक है जबकि वे भाजपा-शासित राज्य में नेतृत्व करने वाली पहली महिला हैं। उनके नेतृत्व से दिल्ली के प्रशासन में नया दृष्टिकोण आने की उम्मीद है जो समाजनियां और विकास पर ध्यान देगा। 19 जुलाई, 1974 को हरियाणा के जुलाना में जन्मी रेखा गुप्ता ने दिल्ली में शिक्षा पाई। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत दीलतराम कालजे से विश्वविद्यालय अथवा चुनावी और 2022 में एलटीएली किया। अपनी प्रशासनिक जटिलताओं से समझने में उनका आधार मजबूत है। उनके राजनीतिक कौरियर की शुरुआत 1992 में दिल्ली विश्वविद्यालय में अधिकारी भारतीय विद्यार्थी परिषद-एवारीयी से जुड़ाव से हुई। जिस ही उनके नेतृत्वकारी गुणों की पहचान हो गई और वे 1996-97 के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय अथवा संघ-दूसरी की अध्यक्ष चुनी गईं।

उन्होंने 2007 और 2012 में उत्तर पीतमुरा से पार्षद के रूप में अपनी राजनीतिक पहचान और मजबूत की जहां उन्होंने अनेक सामुदायिक विकास योजनायें शुरू कीं।

जनता की सेवा तथा प्रभावी प्रशासन के प्रति प्रतिबद्धता के चलते वे 2025 में शालोनपार वाग से विश्वायक चुनी गईं जहां उन्होंने 'आप' की वंदना कुमारी को भारी मतों से प्रसिद्ध किया। रेखा गुप्ता एक समाजिति परिवार से आती है।

यह स्थिति एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चुनावी है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग करती है। यमन सालों से टकरावों का शिकार है जिसके चलते ही रेखा गुप्ता एक समाजिति परिवार से आती है।

उनके पिता भारतीय स्टेट कैम्प में अधिकारी थे और जब वे दो बच्चों की थीं तभी उनका पिता जीवन था। नई मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता को अनेक बड़ी चुनावीयों का सामना करना होगा। दिल्ली में निरंतर जारी यात्रा एवं नदी प्रदूषण पर फैसल ध्यान देना तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए लगातार हस्तक्षेप जरूरी है। इसके साथ ही शहर को अनेक लांचागत कामियों का सामना पड़ रहा है जिसमें परिवर्तन व सार्वजनिक सुविधाओं शामिल हैं। नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए इसमें सुधार जरूरी है। प्रब्राह्म अधिकारियों में किए वादों के अनुसार रेखा गुप्ता की लक्ष्य सरकारी स्कूलों में सुधार कर सबके लिए गुणवत्तपूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। दिल्ली की विश्वविद्यालयों में जिसमें सामुदायिक सेवा और शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। उनके जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए जीवन की गुणवत्ता बेहतर जारी रही है। अधिक रूप से गरीब महिलाओं को मासिक भत्ता देने की प्रतिबद्धता सामिजिक समाज के लिए जरूरी है। मुख्यमंत्री के पद पर रेखा गुप्ता को पहुँचना अनुभव, प्रतिबद्धता तथा दिल्ली के प्रगतिशील भविष्य का मिश्रण है। उनके नेतृत्व से उम्मीद है कि वह राजधानी के प्रशासन की जटिलताओं से सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर टिकाऊ विकास तथा समावेशी प्राप्ति सुनिश्चित करेगा। अब देश की राजधानी में 'ड्डुल इंजन' की सरकार बन गई है, ऐसे में दिल्लीवासी शहर में आमूल परिवर्तनों की उम्मीद कर रहे हैं। इसके पहली दिल्ली की अस्थायों का क्रियावान कठिन हो गया था। इसका कारण केन्द्र और राज्य सरकार के बीच टकराव था। अब यह स्थिति दूर हो गई।

जिसमें सामुदायिक सेवा और शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। उनके पिता भारतीय स्टेट कैम्प में अधिकारी थे और जब वे दो बच्चों की थीं तभी उनका पिता जीवन में बस राया था। नई मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता को अनेक बड़ी चुनावीयों का सामना करना होगा। दिल्ली में निरंतर जारी यात्रा एवं नदी प्रदूषण पर फैसल ध्यान देना तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए लगातार हस्तक्षेप जरूरी है। इसके साथ ही शहर को अनेक लांचागत कामियों का सामना पड़ रहा है जिसमें परिवर्तन व सार्वजनिक सुविधाओं शामिल हैं। नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए इसमें सुधार जरूरी है। प्रब्राह्म अधिकारियों में किए वादों के अनुसार रेखा गुप्ता की लक्ष्य सरकारी स्कूलों में सुधार कर सबके लिए गुणवत्तपूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। दिल्ली की विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता होती है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग करती है। यमन सालों से टकरावों का शिकार है जिसके चलते ही रेखा गुप्ता एक समाजिति परिवार से आती है।

यमन में हत्या की आरोपी निमिषा प्रिया की किस्मत अधर में लटकी है। यह विदेशों में अपने नागरिकों की रक्षा करने

संतोष मैथ्यू
(लेखक, ऐसोसिएट
प्रोफेसर हैं)

यमन की राजधानी सना में भारीय नागरिक निमिषा प्रिया को जटिल परिस्थितियों में एक यमनी नागरिक की हत्या का आरोप झेलना पड़ रहा है। आरोप गंभीर है, पर वास्तव में परिस्थितियों की गंभीरता के कारण यह विद्युत पैदा हुई थी। निमिषा के प्रकरण का संबंध केवल आरोपों से न होकर यह भारत के लिए आहान है कि वह अपने एक नागरिक की सुरक्षा के लिए कदम उठाए। हूठी-नियंत्रित सना में परिवेश जीवितम से भरा है और वहां न्यायोचित सुनवाई या सम्पत्ति पूर्ण समाधान की उम्मीद बहुत कम है।

यह स्थिति एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चुनावी है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग करती है। यमन सालों से टकरावों का शिकार है जिसके चलते ही रेखा गुप्ता की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए लगातार हस्तक्षेप जरूरी है। यह एक समाजिति परिवार से आती है।

परिणाम है और इससे बहुपक्षीय राजनय की क्षमता प्रकट होती है कि वह 'ब्लड मौनी' जैसे परपरागत कबीलाएँ व्यवहारों का अनुसन्धान किए मामले सुलझा सकती हैं। भारतीय विदेश नीति ने लंबे समय से मानवाधिकारों और न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। यह समालों में भी भारत सरकार को इन सिद्धान्तों पर मजबूती से ढंग रहना चाहिए तथा यह विदेशों के निमिषा के जीवन खतरे में भरती-नियंत्रित नायायवादी कार्रवाई की सुनिश्चित करना। यहां से भी दूरी रखना चाहिए। यहां से अपनी रिस्ति मजबूत कर सकता है जो अपने सभी नागरिकों के लिए मानवाधिकार और न्याय की पैरवी की चाहिए।

भारत द्वारा इस बिंदु पर जो देश से न केवल उसके जीवन की रक्षा होगी, बल्कि विश्वायक मूल्यों के खिलाफ है। यहां सरकार ने पहले ही इस संकट से निपटने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस मामले में भारत की राजनीतिक प्रतिक्रिया प्रशंसनीय है। उसने तेजी से कार्रवाई कर यह सुनिश्चित करना कि मामला ज्यादा भड़कने न पाए। उसके अंदरूनीय है कि इरान ने विदेशों से बाहर रखने वाली जीवन खतरे में ही है। हूठी-नियंत्रित न्याय व्यवस्था से सुनिश्चित प्रक्रिया के पालन की वैसी उम्मीद नहीं है जैसी आधुनिक सभ्य समाज में की जाती है। यहां विदेशी आधुनिक सभ्य समाज के साथ अक्सर परिवर्तनकों के बाहर रखना चाहिए। यहां समाजी-व्यवस्था में विभिन्न पक्षों से दबे रहते हैं। भारत राजनीतिक रूप से औपचारिक व अनौपचारिक, दोनों प्रकर के चैनलों का प्रयोग करने में सक्षम है। इससे संकट से निपटने में उसकी विशिष्टता है। जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग है। यह स्थिति एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चुनावी है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग है। यह स्थिति एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चुनावी है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग है। यह स्थिति एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चुनावी है जो भारत के तत्काल हस्तक्षेप की मांग है।

संतोष मैथ्यू
(लेखक, ऐसोसिएट
प्रोफेसर हैं)



परिणाम है और इससे बहुपक्षीय राजनय की क्षमता प्रकट होती है कि वह 'ब्लड मौनी' जैसे परपरागत कबीलाएँ व्यवहारों का अनुसन्धान किए मामले सुलझा सकती हैं। भारतीय विदेश नीति ने लंबे समय से मानवाधिकारों और न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। यह समालों में भी भारत सरकार को इन सिद्धान्तों पर मजबूती से ढंग रहना चाहिए तथा यह विदेशों के निमिषा के जीवन खतरे में ही है। यहां से अपनी रिस्ति मजबूत करना। यहां से अपनी रिस्ति मजबूत करना।

परिणाम है और इससे बहुपक्षीय राजनय की क्षमता प्रकट होती है कि वह 'ब्लड मौनी' जैसे परपरागत कबीलाएँ व्यवहारों का अनुसन्धान किए मामले सुलझा सकती हैं। भारतीय विदेश नीति ने लंबे समय से मानवाधिकारों और न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। यह समालों में भी भारत सरकार को इन सिद्धान्तों पर मजबूती से ढंग रहना चाहिए तथा यह विदेशों के निमिषा के जीवन खतरे में ही है। यहां से अपनी रिस्ति मजबूत करना। यहां से अपनी रिस

